رَقَبَةٍ ﴿۱۳﴾ اَوۡ اِطۡعٰمٌ فِیۡ یَوۡمٍ ذِیۡ مَسۡغَبَةٍ ﴿۱۴﴾ یَّتِیۡمًا ذَا مَقۡرَبَةٍ ﴿۱۵﴾ اَوۡ

की गरदन छुड़ाना[15] या भूक के दिन खाना देना[16] रिश्तेदार यतीम को या

مِسۡکِیۡنًا ذَا مَتۡرَبَةٍ ﴿۱۶﴾ ثُمَّ کَانَ مِنَ الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ تَوَاصَوۡا بِالصَّبۡرِ

ख़ाक नशीन मिस्कीन को[17] फिर हुवा उन से जो ईमान लाए[18] और उन्हों ने आपस में सब्र की वसिय्यतें कीं[19]

وَ تَوَاصَوۡا بِالۡمَرۡحَمَةِ ﴿۱۷﴾ اُولٰٓئِکَ اَصۡحٰبُ الۡمَیۡمَنَةِ ﴿۱۸﴾ وَ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا

और आपस में मेहरबानी की वसिय्यतें कीं[20] येह दहनी त़रफ़ वाले हैं[21] और जिन्हों ने हमारी आयतों

ع ۱۵
بِاٰیٰتِنَا هُمۡ اَصۡحٰبُ الۡمَشۡـَٔمَةِ ﴿۱۹﴾ عَلَیۡهِمۡ نَارٌ مُّؤۡصَدَةٌ ﴿۲۰﴾

से कुफ़्र किया वोह बाई त़रफ़ वाले[22] उन पर आग है कि उस में डाल कर ऊपर से बन्द कर दी गई[23]

اٰیاتها ۱۵ | ۹۱ سُورَةُ الشَّمۡسِ مَکِّیَّةٌ ۲۶ | رکوعها ۱

सूरए शम्स मक्किय्या है, इस में पन्दरह आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़्म वाला[1]

وَ الشَّمۡسِ وَ ضُحٰهَا ﴿۱﴾ وَ الۡقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ﴿۲﴾ وَ النَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ﴿۳﴾

सूरज और उस की रोशनी की क़सम और चांद की जब उस के पीछे आए[2] और दिन की जब उसे चमकाए[3]

15 : ग़ुलामी से। ख़्वाह इस त़रह़ हो कि किसी ग़ुलाम को आज़ाद कर दे या इस त़रह़ कि मुकातब को इतना माल दे जिस से वोह आज़ादी ह़ासिल कर सके या किसी ग़ुलाम को आज़ाद कराने में मदद करे या किसी असीर या मद्यून के रिहा कराने में इआनत करे और येह मा'ना भी हो सकते हैं कि आ'माले सालिह़ा इख़्तियार कर के अपनी गरदन अ़ज़ाबे आख़िरत से छुड़ाए। (روح البیان) **16 :** या'नी क़ह़त़ व गिरानी के वक़्त कि इस वक़्त माल निकालना नफ़्स पर बहुत शाक़ और अज्रे अ़ज़ीम का मूजिब होता है। **17 :** जो निहायत तंगदस्त और दरमांदा (नाचार), न उस के पास ओढ़ने को हो न बिछाने को। ह़दीस शरीफ़ में है : यतीमों और मिस्कीनों की मदद करने वाला जिहाद में सई करने वाले और बे तकान शब बेदारी करने वाले और मुदाम (पाबन्दी के साथ) रोज़ा रखने वाले की मिस्ल है। **18 :** या'नी येह तमाम अ़मल जब मक़्बूल हैं कि अ़मल करने वाला ईमानदार हो और जब ही उस को कहा जाएगा कि घाटी में कूदा और अगर ईमानदार नहीं तो कुछ नहीं सब अ़मल बेकार। **19 :** मा'सियतों से बाज़ रहने और त़ाअ़तों के बजा लाने और उन मशक़्क़तों के बरदाश्त करने पर जिन में मोमिन मुब्तला हो। **20 :** कि मोमिनीन एक दूसरे के साथ शफ़्क़तो मह़ब्बत का बरताव करें। **21 :** जिन्हें उन के नामए आ'माल दाहने हाथ में दिये जाएंगे और अ़र्श के दाहने जानिब से जन्नत में दाख़िल होंगे। **22 :** कि उन्हें उन के नामए आ'माल बाएं हाथ में दिये जाएंगे और अ़र्श के बाईं जानिब से जहन्नम में दाख़िल किये जाएंगे। **23 :** कि न उस में बाहर से हवा आ सके न अन्दर से धूआं बाहर जा सके। **1 :** "सूरतुश्शम्स" मक्किय्या है इस में एक रुकूअ़, पन्दरह आयतें, चव्वन कलिमे, दो सो सेंतालीस ह़र्फ़ हैं। **2 :** या'नी ग़ुरूबे आफ़्ताब के बा'द त़ुलूअ़ करे, येह क़मरी महीने के पहले पन्दरह दिन में होता है। **3 :** या'नी आफ़्ताब को ख़ूब वाज़ेह़ करे क्यूं कि दिन नूरे आफ़्ताब का नाम है तो जितना दिन ज़ियादा रोशन होगा उतना ही आफ़्ताब का ज़ुहूर ज़ियादा होगा क्यूं कि असर की क़ुव्वत और उस का कमाल मुअस्सिर के क़ुव्वतो कमाल पर दलालत करता है या येह मा'ना हैं कि जब दिन दुन्या को या ज़मीन को रोशन करे या शब की तारीकी को दूर करे।

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ۪ۙ﴿۴﴾ وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰىهَا ۪ۙ﴿۵﴾ وَالْاَرْضِ وَمَا

और रात की जब उसे छुपाए[4] और आस्मान और उस के बनाने वाले की क़सम और ज़मीन और उस के

طَحٰىهَا ۪ۙ﴿۶﴾ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۪ۙ﴿۷﴾ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۪ۙ﴿۸﴾

फैलाने वाले की क़सम और जान की और उस की जिस ने उसे ठीक बनाया[5] फिर उस की बदकारी और उस की परहेज़ गारी दिल में डाली[6]

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۪ۙ﴿۹﴾ وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ؕ﴿۱۰﴾ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ

बेशक मुराद को पहुंचा जिस ने उसे[7] सुथरा किया[8] और ना मुराद हुवा जिस ने उसे मा'सियत में छुपाया समूद ने अपनी

بِطَغْوٰىهَاۤ ۪ۙ﴿۱۱﴾ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۪ۙ﴿۱۲﴾ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ

सरकशी से झुटलाया[9] जब कि उस का सब से बद बख़्त[10] उठ खड़ा हुवा तो उन से **अल्लाह** के रसूल[11] ने फ़रमाया **अल्लाह** के

اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ؕ﴿۱۳﴾ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۪ۙ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ

नाक़ा[12] और उस की पीने की बारी से बचो[13] तो उन्हों ने उसे झुटलाया फिर नाक़ा की कूचें काट दीं (पाउं काट दिये) तो उन पर उन के रब ने उन के

بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۪ۙ﴿۱۴﴾ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۠﴿۱۵﴾

गुनाह के सबब[14] तबाही डाल कर वोह बस्ती बराबर कर दी[15] और उस के पीछा करने का उसे ख़ौफ़ नहीं[16]

اٰياتها ۲۱ — ۹۲ سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ ۹ — رکوعها ۱

सूरए लैल मक्किय्या है, इस में इक्कीस आयतें और एक रुकूअ़ है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रहम वाला[1]

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۙ﴿۱﴾ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۙ﴿۲﴾ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ

और रात की क़सम जब छाए[2] और दिन की जब चमके[3] और उस[4] की जिस ने नर

4 : या'नी आफ़्ताब को और आफ़ाक़ ज़ुल्मत व तारीकी से भर जाएं या येह मा'ना कि जब रात दुन्या को छुपाए। **5 :** और क़ुवाए कसीरा (कसीर क़ुव्वतें) अ़ता फ़रमाए। (जैसे) नुत़्क़, सम्अ़, बसर, फ़िक्र, ख़याल, इल्म, फ़ह्म सब कुछ अ़ता फ़रमाया। **6 :** ख़ैरो शर और त़ाअ़त व मा'सियत से उसे बा ख़बर कर दिया और नेक व बद बता दिया। **7 :** या'नी नफ़्स को **8 :** बुराइयों से। **9 :** अपने रसूल ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام को **10 :** क़ुदार बिन सालिफ़ उन सब की मरज़ी से नाक़ा की कूंचें काटने के लिये **11 :** ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام **12 :** के दरपै होने **13 :** या'नी जो दिन उस के पीने का मुक़र्रर है उस रोज़ पानी में तअ़र्रुज़ न करो ताकि तुम पर अ़ज़ाब न आए **14 :** या'नी ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام की तक्ज़ीब और नाक़ा की कूंचें काटने के सबब **15 :** और सब को हलाक कर दिया, उन में से कोई न बचा **16 :** जैसा बादशाहों को होता है क्यूं कि वोह मालिकुल मुल्क है जो चाहे करे, किसी को मजाले दम ज़दन (कुछ कहने की त़ाक़त) नहीं। बा'ज़ मुफ़स्सिरीन ने इस के मा'ना येह भी बयान किये हैं कि ह़ज़रते सालेह़ عَلَيْهِ السَّلَام को उन में से किसी का ख़ौफ़ नहीं कि नुज़ूले अ़ज़ाब के बा'द उन्हें ईज़ा पहुंचा सके।
1 : "सूरए वल्लैल" मक्किय्या है, इस में एक रुकूअ़, इक्कीस आयतें, इक्हत्तर कलिमे, तीन सो दस ह़र्फ़ हैं। **2 :** जहान पर अपनी तारीकी से

www.dawateislami.net